



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 319]

नई दिल्ली, बुधवार, जून 26, 1986/आसाधा 5, 1908

No 319] NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 26, 1986/ASADHA 5, 1908

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
a separate compilation

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 जून, 1986

में 355/86-केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

सा. का. नि. 909 (अ) :—केन्द्रीय सरकार का यह समाधान
हो गया है कि ऐसी प्रथा के अनुसार जो उत्पाद-शुल्क के उद्ग्रहण की
बाबत (जिसके अन्तर्गत उक्त उद्ग्रहण न किया जाना भी है) केन्द्रीय
उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा
3 के अधीन साधारण तथा प्रचलित थी, उक्त अधिनियम की पहली अनु-
सूचा, तथा कि वह अनुसूचा के तहत उत्पाद-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1985
(1985 का 5) के प्रारं. के पूर्व विद्यमान थी, की मद सं. 21 की
उपमद (1) के अन्तर्गत आने वाले ऐसे ऊनी फैब्रिकों पर, जिनका
प्रसंस्करण ऐसे प्रसंस्करणों द्वारा किया गया था जो ऊनी फैब्रिकों के
प्रसंस्करण में अन्वय रूप से नहीं खते हुए थे, उत्पाद-शुल्क, 16 जनवरी,
1985 के पूर्व अधि के दौरान, इस प्रकार प्रभावी उत्पाद-शुल्क के संबंध
में केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी की गई किसी अधिसूचना के साथ पठित
उक्त धारा 3 के अधीन कम उद्ग्रहीत किया गया था ;

1957 (1957 का 58) की धारा 3 के अधीन कम उद्ग्रहीत किया
गया था ;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधि-
नियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 11 ग द्वारा प्रचलित प्रथाओं
का प्रयोग करते हुए, यह निदेश देती है कि उक्त प्रथा के न होने पर
ऐसे ऊनी फैब्रिकों पर पूर्वोक्त अधिनियमों के अधीन संवेद्य उत्पाद-शुल्क
और प्रतिरिक्त उत्पाद-शुल्क का वह संपूर्ण भाग ऐसे ऊनी फैब्रिकों की
बाबत संदेय किया जाना अपेक्षित नहीं होगा जिन पर उक्त उत्पाद-
शुल्क और प्रतिरिक्त उत्पाद-शुल्क, उक्त प्रथा के अनुसार, पूर्वोक्त अधिधि
के दौरान कम उद्ग्रहीत किए गए थे ।

[का. म. 53/418-सी. एन-2]

सी. पी. श्रीवास्तव, सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th June, 1986

No. 358/86-CENTRAL EXCISES

G.S.R. 909(E).—Whereas the Central Government
is satisfied that according to a practices that was
generally prevalent regarding levy of duty of excise

(including non-levy thereof) under section 3 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the duty of excise on woollen fabrics, falling under sub-item (1) of item No. 21 of the First Schedule to the said Act, as that Schedule existed prior to the commencement of the Central Excise Tariff Act, 1985 (5 of 1985), and processed by the processors who were not exclusively engaged in the processing of woollen fabrics, was short-levied under the said section 3, read with any Notification issued by the Central Government in relation to the duty of excise so chargeable, during the period prior to the 16th day of January, 1985;

And whereas the additional duty of excise on such woollen fabrics were also short-levied under section 3 of the Additional Duties of Excise (Goods of Special

Importance) Act, 1957 (58 of 1957), during the period aforesaid ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 11-C of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby directs that the whole of that portion of the duty of excise and additional duty of excise payable under the aforesaid Acts on such woollen fabrics, but for the said practice, shall not be required to be paid in respect of such woollen fabrics, on which the said duty of excise and the additional duty of excise were short-levied during the period aforesaid, in accordance with the said practice.

[F. No. 53/4/85-CX.2]

C. P. SRIVASTAVA, Under Secy.